BRDU International Journal of Multidisciplinary Research
ISSN :2455-278X
(A peer reviewed and refereed Journal)
Vol.8, Issue.XII, December 2023, Pc:BRDU-2312002

उच्च शिक्षा में महिलाओं की भागीदारी में बाधाएंः रांची जिले का समाजशास्त्रीय विश्लेषण

Reeta kumari, Research scholar
Department of Sociology, Radha Govind University
Ramgarh, Jharkhand

Dr. Mamta Maurya, Assistant Professor
Department of Sociology, Radha Govind University
Ramgarh, Jharkhand

अमूर्त

यह पेपर झारखंड के रांची जिले में उच्च शिक्षा में महिलाओं की भागीदारी में बाधाओं का समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से अध्ययन करता है। यह अध्ययन उन विभिन्न कारकों की पहचान करता है जो महिलाओं की उच्च शिक्षा तक पहुंच में बाधा डालते हैं, विशेष रूप से सामाजिक–सांस्कृतिक, आर्थिक और संस्थागत चुनौतियों पर ध्यान केंद्रित करता है। एक प्रश्नावली आधारित पद्धति का उपयोग किया गया, जिसमें 300 महिला उत्तरदाताओं से डेटा एकत्र किया गया, ताकि स्थिति का समग्र विश्लेषण प्रदान किया जा सके। निष्कर्ष बताते हैं कि सामाजिक–सांस्कृतिक मानदंड, जैसे कि जल्दी विवाह और घरेलू जिम्मेदारियां, महिलाओं की शैक्षिक आकांक्षाओं में महत्वपूर्ण बाधा डालते हैं। आर्थिक बाधाएं, जैसे कि वित्तीय समस्याएं और छात्रवृत्तियों तक सीमित पहुंच, इन चुनौतियों को और बढ़ाती हैं। इसके अतिरिक्त, संस्थागत कमियां, जैसे कि लिंग–संवेदनशील बुनियादी ढांचे की कमी, उच्च शिक्षा में चल रही लिंग विषमताओं में योगदान करती हैं। यह पेपर इन बाधाओं को संबोधित करने और महिला भागीदारी को बढ़ावा देने के लिए लक्षित नीतिगत हस्तक्षेपों की तत्काल आवश्यकता पर जोर देता है। सिफारिशों में विशेष रूप से महिला छात्रों के लिए वित्तीय सहायता बढ़ाना, लड़कियों की शिक्षा के महत्व पर जागरूकता अभियानों को लागू करना और शैक्षणिक संस्थानों के भीतर समर्थन तंत्र को बढ़ाना शामिल हैं। इन मुद्दों को संबोधित करके, हितधारक रांची जिले में एक अधिक समान शैक्षणिक वातावरण बनाने में मदद कर सकते हैं, जिससे अंततः उच्च शिक्षा में लिंग समानता में वृद्धि होगी।

कीवर्डः *लिंग विषमताएँ, उच्च शिक्षा, महिला भागीदारी, सामाजिक–सांस्कृतिक बाधाएँ, आर्थिक बाधाएँ, संस्थागत समर्थन, रांची जिला, झारखंड।*

परिचय

उच्च शिक्षा न केवल एक मौलिक अधिकार है, बल्कि व्यक्तिगत सशक्तीकरण और सामाजिक विकास के लिए एक महत्वपूर्ण प्रेरक शक्ति भी है। यह व्यक्तियों को एक तेजी से जटिल होते विश्व में नेविगेट करने और अर्थव्यवस्था और समाज में सार्थक रूप से भाग लेने के लिए आवश्यक ज्ञान और कौशल प्रदान करती है। उच्च शिक्षा महत्वपूर्ण सोच, रचनात्मकता और नवाचार को बढ़ावा देने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, जो व्यक्तिगत विकास और सामुदायिक कल्याण के लिए आवश्यक हैं।

हालांकि, शिक्षा नीति और बुनियादी ढांचे में महत्वपूर्ण प्रगति के बावजूद, कई क्षेत्रों, विशेष रूप से ग्रामीण और अर्ध–शहरी क्षेत्रों में, उच्च शिक्षा में महिला भागीदारी पुरुषों की तुलना में काफी कम है। शैक्षिक पहुंच में यह लिंग विषमता न केवल महिलाओं के लिए, बल्कि परिवारों, समुदायों और राष्ट्र के लिए भी दूरगामी प्रभाव डालती है। शिक्षित महिलाएँ आर्थिक विकास में योगदान देने, अपने बच्चों के स्वास्थ्य और शिक्षा में सुधार करने और सामाजिक परिवर्तन की वकालत करने की अधिक संभावना रखती हैं।

यह पेपर विशेष रूप से झारखंड के रांची जिले पर केंद्रित है, जो एक ऐसा क्षेत्र है जहां पारंपरिक लिंग मानदंड और सामाजिक–आर्थिक चुनौतियाँ शैक्षिक विषमताओं को बढ़ावा देती हैं। इस संदर्भ में, महिलाओं की भूमिकाओं के बारे में सांस्कृतिक धारणाएँ अक्सर शैक्षिक आकांक्षाओं की तुलना में घरेलू जिम्मेदारियों को प्राथमिकता देती हैं, जिसके परिणामस्वरूप जल्दी विवाह और उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए समर्थन की कमी होती है। इसके अतिरिक्त, गरीबी और संसाधनों की सीमित पहुंच जैसी आर्थिक बाधाएं महिलाओं के शैक्षिक अवसरों को और अधिक बाधित करती हैं।

इसके अलावा, संस्थागत कारक, जैसे कि अपर्याप्त बुनियादी ढाँचा और शैक्षणिक संस्थानों में लिंग–संवेदनशील नीतियों की कमी, इन चुनौतियों को बढ़ाते हैं। महिलाएँ अक्सर एक ऐसे वातावरण का सामना करती हैं जो उनके अकादमिक सफलता के लिए अनुकूल नहीं होता, जिसके परिणामस्वरूप महिला छात्रों में नामांकन दरें कम और अनुपस्थिति दरें अधिक होती हैं।

यह परिचय रांची जिले में महिलाओं को उच्च शिक्षा तक पहुँचने में सामना की जाने वाली बाधाओं की गहराई से जांच के लिए मंच तैयार करता है। इन बाधाओं का समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से अध्ययन करके, यह पेपर शिक्षा में लिंग विषमताओं की जटिलताओं पर प्रकाश डालने और उच्च शिक्षा में महिला भागीदारी को बढ़ाने के लिए लक्षित हस्तक्षेपों की सिफारिशें करने का प्रयास करता है। इस जांच के माध्यम से, यह अध्ययन लिंग समानता और शिक्षा के परिवर्तनकारी प्रभाव के रूप में महत्व पर व्यापक चर्चा में योगदान देने की आकांक्षा रखता है।

साहित्य की समीक्षा

सिफुना, डी. एन. (2006) इस पेपर में केन्या में लड़कियों और महिलाओं की उच्च शिक्षा में भागीदारी में रुकावट डालने वाली प्रमुख बाधाओं की व्यापक समीक्षा प्रस्तुत की गई है। यह इस आधार पर है कि उच्च शिक्षा में उनकी कम भागीदारी देश के विकास के लिए एक प्रमुख बाधा है। जबकि यह माना जाता है कि लड़कियों और महिलाओं की शिक्षा मानव विकास के अन्य पहलुओं से अविभाज्य रूप से जुड़ी हुई है, इस पेपर में ध्यान शैक्षिक मुद्दों पर केंद्रित है। पहचानी गई प्रमुख बाधाओं में नीति ढांचा शामिल है, जिसमें यह देखा गया है कि केन्या में औपनिवेशिक काल से लिंग शिक्षा की उपलब्धता का एक महत्वपूर्ण निर्धारक रहा है। औपनिवेशिक आर्थिक संरचनाओं के कारण महिलाओं की अधीनता और पारंपरिक सांस्कृतिक प्रथाओं ने यह निर्धारित किया कि वे शिक्षा में कितनी भागीदारी कर सकती हैंय इस प्रकार, औपनिवेशिकता के अंतिम दशकों में, बहुत कम संख्या में लड़कियाँ प्राथमिक और माध्यमिक विद्यालयों में गईं। यह भी देखा गया है कि जबकि स्वतंत्रता के बाद महिलाओं के शिक्षा और रोजगार के अवसर बढ़े हैं, लिंग विषमता बनी रही है। सरकार से अनुरोध किया गया है कि वह विधायी और नीतिगत सुधारों के माध्यम से महिला शिक्षा को बढ़ावा दे। सभी के लिए गुणवत्तापूर्ण प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा का अधिकार होना चाहिए। जबकि माध्यमिक शिक्षा महिलाओं की उच्च शिक्षा का द्वार है, सरकारी नीतियाँ अक्सर लड़कियों को खराब गुणवत्ता वाले माध्यमिक विद्यालयों में पढ़ने के लिए मजबूर करती हैं। लड़कियों के लिए खराब गुणवत्ता वाली माध्यमिक शिक्षा का प्रभाव सार्वजनिक विश्वविद्यालयों में चिकित्सा और इंजीनियरिंग जैसे अधिक प्रतिस्पर्धात्मक पाठ्यक्रमों में उनकी गंभीर अनुपस्थितियों में देखा जाता है। सुझाव दिया गया है कि विश्वविद्यालय में प्रवेश में महिलाओं की भागीदारी बढ़ाने के लिए कुछ सकारात्मक उपाय अपनाए जाएँ, साथ ही विज्ञान और प्रौद्योगिकी में ब्रिजिंग पाठ्यक्रमों की स्थापना की जाए और प्रौद्योगिकी–आधारित तृतीयक संस्थानों के छात्रों के लिए विश्वविद्यालय प्रवेश में क्रेडिट ट्रांसफर की अनुमति दी जाए।

फुलर, ए., फोस्केट, आर., पैटन, के., – मारिंगे, एफ. (2008) यह अध्ययन दक्षिण एशिया में विश्वविद्यालय नेतृत्व पदों पर महिलाओं का सामना करने वाली व्यक्तिगत, सामाजिक और संगठनात्मक बाधाओं की जांच करता है, जो मलेशिया और बांग्लादेश के मामलों पर आधारित है। हमने इस विषय पर इंटरैक्शनिस्ट नारीवादी सिद्धांत के दृष्टिकोण से चर्चा की। मलेशिया और बांग्लादेश की 12 सार्वजनिक विश्वविद्यालयों से 20 महिला डीनों के साथ सेमी–स्ट्रक्चर्ड इंटरव्यू किए गए, इसके बाद आठ महिला डीनों के साथ दो फोकस ग्रुप चर्चाएँ आयोजित की गईं। परिणाम बताते हैं कि व्यक्तिगत बाधाएँ जैसे परिवार की जिम्मेदारियाँ, तकनीकी ज्ञान की कमी, नेतृत्व पदों में रुचि, जीवनसाथी का समर्थन और खराब समय प्रबंधन, और जीवनसाथी का समर्थन न होना, बांग्लादेश में महिला डीनों के लिए प्रमुख बाधाएँ थीं। डीनशिप में रुचि की कमी ने महिला डीनों के कम प्रतिनिधित्व को बढ़ा दिया। प्रतिभागियों ने मलेशियाई महिला डीनों द्वारा सामना की जाने वाली सामाजिक–सांस्कृतिक बाधाओं की संख्या कम बताई, जबकि बांग्लादेशी प्रतिभागियों ने प्रमुख समस्याओं का सामना किया। सार्वजनिक विश्वविद्यालयों में महिला डीनों के लिए संगठनात्मक बाधाओं की रिपोर्ट की गई। ये निष्कर्ष महत्वपूर्ण संगठनात्मक और नीति संबंधी प्रभाव रखते हैं।

छहनलम, टी. एल. एच. (2013) हालांकि पुरुष सहयोगियों की तुलना में महिला अकादमिकों की प्रगति धीमी रही है और महिला अकादमिक नेताओं को नेतृत्व की भूमिकाएँ निभाने में जिन चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, वे अच्छी तरह से प्रलेखित हैं, लेकिन विकासशील देशों जैसे वियतनाम में महिला अकादमिक नेताओं और प्रबंधकों के करियर उन्नति के बारे में बहुत कम जानकारी है। यह पेपर कैम्ब्रिजकृवियतनाम महिला नेतृत्व कार्यक्रम द्वारा वित्तपोषित एक अनुसंधान परियोजना के अन्वेषणात्मक अध्ययन की रिपोर्ट करता है, जिसका उद्देश्य वियतनामी उच्च शिक्षा में महिला अकादमिक प्रबंधकों की स्थिति को समझना और उन्हें सशक्त बनाने की रणनीतियों की पहचान करना है। इस पेपर का ध्यान विश्वविद्यालय के नेताओं और महिला डीनों के दृष्टिकोण पर है, जो महिला अकादमिक डीनशिप के लिए बाधाओं और महिला डीनों के करियर उन्नति के लिए सहायक कारकों पर उनके विचारों को प्रतिबिंबित करता है। अध्ययन में पाया गया कि मुख्य बाधाएँ मजबूत पारिवारिक जिम्मेदारियाँ, महिलाओं के नेता के रूप में नकारात्मक लिंग रूढ़ियाँ, और महिला अकादमिकों की प्रबंधन पदों पर जाने की अनिच्छा हैं। महिला डीनों के करियर उन्नति के प्रमुख सहायक कारक

आत्म प्रयास, मजबूत पारिवारिक समर्थन, और जो एक अनुकूल या श्भाग्यशालीश चयन संदर्भ के रूप में देखा जाता है, हैं। यह पेपर इस दृष्टिकोण का समर्थन करने के लिए अनुभवजन्य साक्ष्य प्रदान करता है कि पारिवारिक समर्थन वियतनाम में महिला अकादमिक करियर उन्नति के लिए एक महत्वपूर्ण कारक है। महिलाएँ महिला अकादमिक नेतृत्व को सशक्त बनाने में एक एजेंट और एक वस्तु दोनों हैं।

अंबरिन, एम. (2015) वर्तमान अध्ययन का उद्देश्य पाकिस्तान में उच्च शिक्षा प्रबंधन में लिंग भेदभाव के लिए जिम्मेदार कारकों का पता लगाना था। अध्ययन की जनसंख्या में रावलपिंडी और इस्लामाबाद में स्थित 11 सार्वजनिक और तीन निजी क्षेत्र के विश्वविद्यालयों के 234 प्रशासक शामिल थे। डेटा से पता चला कि भर्ती और पदोन्नति की नीतियाँ, घर में महिलाओं की भूमिका और सांस्कृतिक बाधाएँ, जीवनसाथी और परिवार से समर्थन की कमी आदि को उच्च शिक्षा प्रबंधन में महिलाओं की सीमित पहुंच के मुख्य कारण माना गया। उंसम प्रशासक अधिक पूर्वाग्रहित पाए गए। ये पूर्वाग्रह और रूढ़ियाँ उच्च शिक्षा प्रबंधन में लिंग अंतर का प्रमुख कारण हो सकती हैं क्योंकि वे संख्या और अधिकार में हावी थे। महिलाओं की शिक्षा, प्रशिक्षण और अनुसंधान के अवसरों तक विस्तृत पहुंच और रूढ़ियों को हतोत्साहित करना तथा विधायी और सरकारी समर्थन, अधिक महिलाओं को उच्च शिक्षा प्रबंधन में पद ग्रहण करने में सहायता कर सकता है और इस प्रकार उनकी क्षमताओं को विकसित करने के साथ–साथ राष्ट्र की सेवा कर सकता है।

अध्ययन के उद्देश्य

- उच्च शिक्षा में महिला भागीदारी को प्रभावित करने वाली सामाजिक–संस्कृतिक बाधाओं की पहचान करना।
- उन आर्थिक कारकों का विश्लेषण करना जो महिलाओं की उच्च शिक्षा तक पहुंच में बाधा डालते हैं।
- शैक्षणिक प्रणालियों में उन संस्थागत बाधाओं की खोज करना जो महिला छात्रों को प्रभावित करती हैं।
- उच्च शिक्षा में महिला भागीदारी को बढ़ाने के लिए सिफारिशें प्रदान करना।

अनुसंधान कार्यप्रणाली

1. अनुसंधान डिजाइन

यह अध्ययन एक मात्रात्मक अनुसंधान डिजाइन को अपनाता है, जिसमें उच्च शिक्षा में बाधाओं के संबंध में महिला उत्तरदाताओं की धारणाओं और अनुभवों को एक प्रश्नावली के माध्यम से डेटा एकत्रित करने के लिए उपयोग किया जाता है।

2. नमूना चयन

कुल 300 महिला उत्तरदाताओं का चयन रांची जिले के विभिन्न कॉलेजों और विश्वविद्यालयों से श्रेणीबद्ध यादृच्छिक नमूना चयन विधि के माध्यम से किया गया। नमूने में विभिन्न सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमियों, शैक्षणिक विषयों और शैक्षिक स्तरों की छात्राएं शामिल थीं।

3. डेटा संग्रहण उपकरण

डेटा संग्रह के लिए एक संरचित प्रश्नावली विकसित की गई। प्रश्नावली में तीन खंड शामिल थे–

खंड 1– जनसांख्यिकीय जानकारी (उम्र, सामाजिक–आर्थिक स्थिति, शैक्षिक पृष्ठभूमि)

खंड 2– सामाजिक–सांस्कृतिक बाधाएं (सामाजिक मानदंड, पारिवारिक समर्थन, साथियों का प्रभाव से संबंधित प्रश्न)

खंड 3– आर्थिक और संस्थागत बाधाएं (वित्तीय सीमाओं, छात्रवृत्तियों की उपलब्धता, संस्थागत समर्थन से संबंधित प्रश्न)

प्रश्नावली की स्पष्टता और विश्वसनीयता सुनिश्चित करने के लिए इसे एक छोटे समूह के उत्तरदाताओं के साथ पूर्व–परीक्षित किया गया।

4. डेटा संग्रह प्रक्रिया

डेटा दो महीनों की अवधि में एकत्रित किया गया। शोधकर्ता ने प्रश्नावलियों का प्रशासन व्यक्तिगत रूप से किया, यह सुनिश्चित करते हुए कि उत्तरदाता प्रश्नों को समझते हैं। भागीदारी स्वैच्छिक थी, और गोपनीयता बनाए रखी गई।

5. डेटा विश्लेषण

डेटा का विश्लेषण सांख्यिकीय विधियों का उपयोग करके किया गया, जिसमें वर्णात्मक सांख्यिकी (औसत, आवृत्ति, प्रतिशत) और निष्कर्षात्मक सांख्यिकी (ची–स्क्वायर परीक्षण) शामिल हैं, ताकि चर के बीच महत्वपूर्ण संबंधों की पहचान की जा सके।

परिणाम और चर्चा

तालिका 1 उत्तरदाताओं की जनसांख्यिकीय प्रोफाइल

जनसांख्यिकीय प्रोफाइल	विकल्प	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
आयु	18–20 वर्ष	120	40.0%
	21–25 वर्ष	90	30.0%

	26–30 वर्ष	60	20.0%
	30 वर्ष से अधिक	30	10.0%
सामाजिक–आर्थिक स्थिति	गरीबी रेखा से नीचे	50	16.7%
	निम्न आय	100	33.3%
	मध्यम आय	90	30.0%
	उच्च मध्यम आय	40	13.3%
	उच्च आय	20	6.7v
शैक्षिक पृष्ठभूमि	माध्यमिक शिक्षा पूरी की	150	50.0%
	स्नातक कार्यक्रम में नामांकित	100	33.3%
	स्नातकोत्तर डिग्री पूरी की	30	10.0%
	स्नातकोत्तर कार्यक्रम में नामांकित	15	5.0%
	स्नातकोत्तर डिग्री पूरी की	5	1.7%

तालिका 2 शैक्षणिक संस्थान महिला छात्रों के लिए पर्याप्त सहायता प्रदान करते हैं

कथन	**संख्या**	**प्रतिशत**
दृढ़तापूर्वक सहमत	121	40.33%
सहमत	20	6.67%
तटस्थ	137	45.67%
असहमत	12	4.00%
दृढ़तापूर्वक असहमत	10	3.33%
कुल	**300**	**100.0**

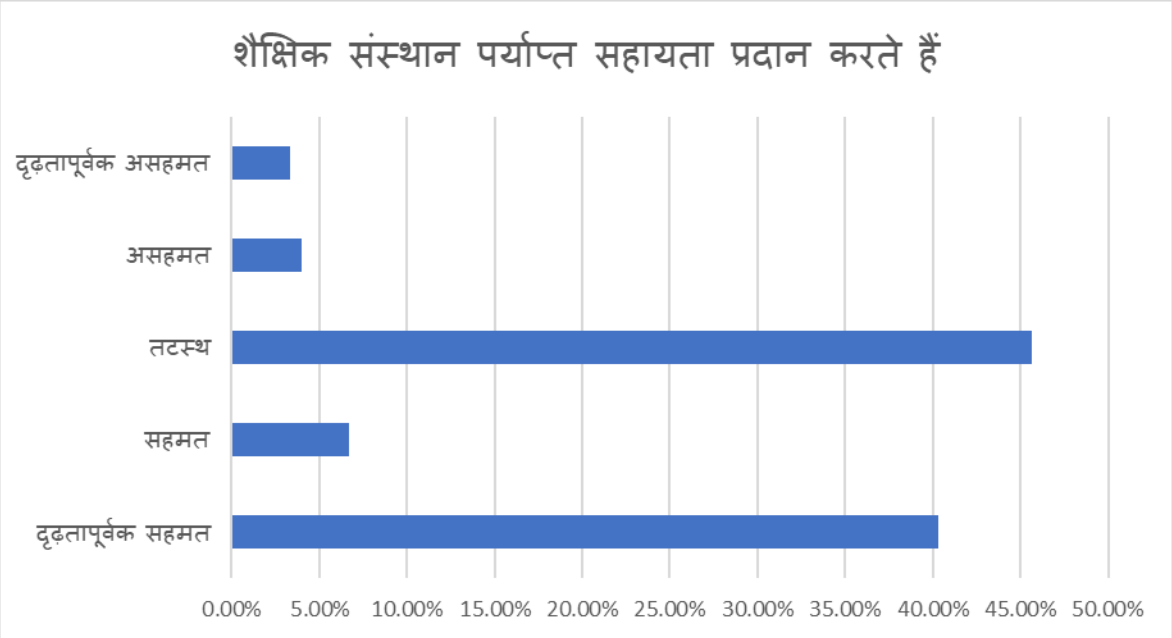

आकृति 2 शैक्षणिक संस्थान महिला छात्रों के लिए पर्याप्त सहायता प्रदान करते हैं।

तालिका 3 सामाजिक मानदंड उच्च शिक्षा प्राप्त करने के निर्णय को प्रभावित करते हैं

कथन	**संख्या**	**प्रतिशत**
दृढ़तापूर्वक सहमत	60	20.00%

सहमत	45	15.00%
तटस्थ	140	46.67%
असहमत	45	15.00%
दृढ़तापूर्वक असहमत	10	3.33%
कुल	**300**	**100.0**

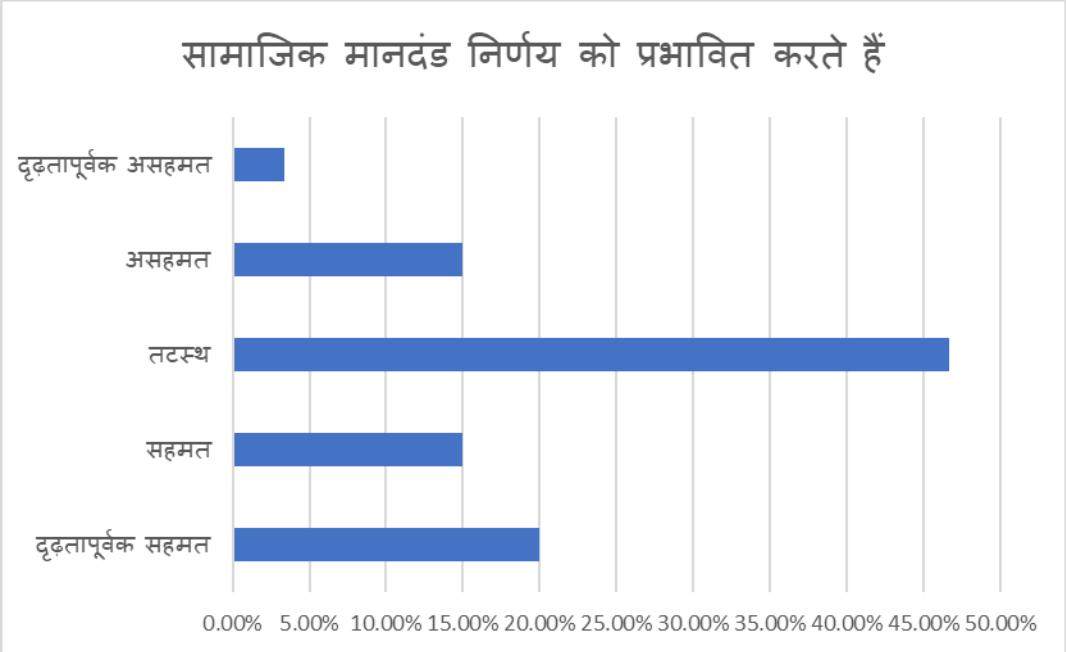

आकृति 3 सामाजिक मानदंड उच्च शिक्षा प्राप्त करने के निर्णय को प्रभावित करते हैं

तालिका 4 उच्च शिक्षा के लिए सहयोग करने वाला परिवार

कथन	**संख्या**	**प्रतिशत**
सहायक नहीं	110	36.67%
थोड़ा सहायक	106	35.33%
मध्यम रूप से सहायक	44	14.67%
बहुत सहायक	25	8.33%
अत्यधिक सहायक	15	5.00%
कुल	**300**	**100.0**

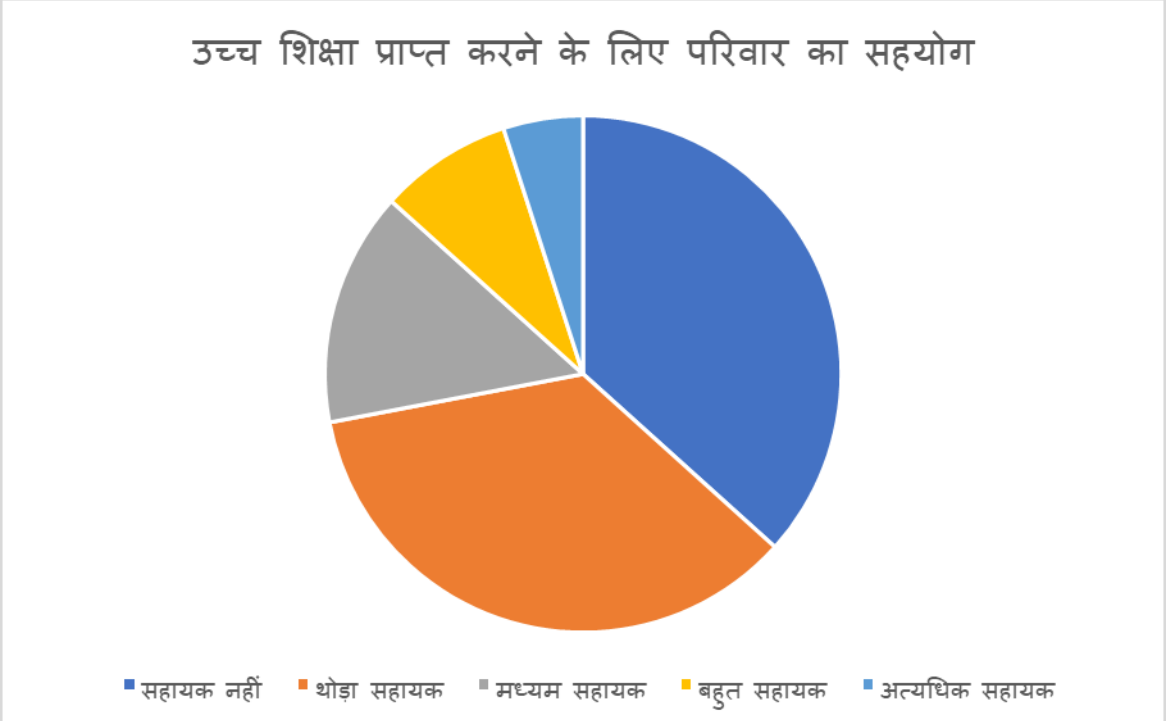

आकृति 4 उच्च शिक्षा के लिए सहयोग करने वाला परिवार

उत्तरदाताओं का जनसांख्यिकीय प्रोफाइल, जो कि तालिका 1 में प्रस्तुत किया गया है, यह दर्शाता है कि प्रतिभागियों का एक महत्वपूर्ण हिस्सा 18–20 वर्ष की आयु वर्ग में आता है (40.0:), जो उच्च शिक्षा में संलग्न एक युवा जनसंख्या को इंगित करता है। सामाजिक–आर्थिक स्थिति दिखाती है कि 33.3: उत्तरदाता निम्न–आय वाले परिवारों से संबंधित हैं, जो कई छात्रों द्वारा सामना की जा रही आर्थिक चुनौतियों को उजागर करता है। इसके अतिरिक्त, 50.0: ने माध्यमिक शिक्षा पूरी की है, जबकि केवल 5.0: ने स्नातकोत्तर डिग्री पूरी की है, जो उच्च शिक्षा स्तरों में आगे बढ़ने में संभावित बाधा को दर्शाता है।

तालिका 2 में यह दर्शाया गया है कि शिक्षण संस्थानों द्वारा मिउंसम छात्रों के लिए प्रदान किए गए समर्थन की पर्याप्तता के बारे में धारणाएँ क्या हैं। उल्लेखनीय है कि 40.33: उत्तरदाता यह मजबूत सहमति व्यक्त करते हैं कि पर्याप्त समर्थन प्रदान किया जाता है, जबकि 45.67: तटस्थ बने रहते हैं, जो यह दर्शाता है कि कई छात्र इस बात को लेकर अनिश्चित हैं कि उन्हें जो संस्थागत समर्थन प्राप्त हो रहा है, वह कितना प्रभावी है। यह अनिश्चितता सुझाव देती है कि जबकि कुछ छात्र समर्थन महसूस करते हैं, लेकिन समर्थन प्रणालियों की जागरूकता या प्रभावशीलता में काफी कमी हो सकती है।

तालिका 3 में, उच्च शिक्षा को आगे बढ़ाने के निर्णय पर सामाजिक मानदंडों के प्रभाव का आकलन किया गया है। यहाँ, केवल 20.00: ने यह मजबूत सहमति व्यक्त की है कि सामाजिक मानदंड शैक्षिक प्रयासों पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालते हैं, जबकि एक महत्वपूर्ण 46.67: तटस्थ बने रहते हैं। यह तटस्थता व्यक्तिगत आकांक्षाओं और सामाजिक अपेक्षाओं के बीच जटिल अंतःक्रिया को दर्शा सकती है, जो यह दर्शाती है कि सामाजिक प्रभाव किस प्रकार शैक्षिक विकल्पों में प्रकट होते हैं, इस पर आगे की जांच की आवश्यकता है।

तालिका 4 में उत्तरदाताओं द्वारा उच्च शिक्षा के लिए प्राप्त पारिवारिक समर्थन की जांच की गई है। एक बहुमत, 36.67:, ने बताया कि उनके पास सहायक परिवार नहीं हैं, जबकि केवल 5.00: ने संकेत दिया कि उन्हें अत्यधिक समर्थन मिला है। यह पिदकपदह यह दर्शाती है कि कई महिला छात्रों को घर पर किस प्रकार की चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, क्योंकि पारिवारिक समर्थन उनकी शैक्षिक आकांक्षाओं के लिए महत्वपूर्ण है।

कुल मिलाकर, ये तालिकाएँ सामूहिक रूप से उच्च शिक्षा में महिला छात्रों द्वारा सामना की जाने वाली जटिल बाधाओं को दर्शाती हैं, जो जनसांख्यिकीय कारकों, संस्थागत समर्थन, सामाजिक प्रभावों और पारिवारिक गतिशीलता में महत्वपूर्ण अंतर्दृष्टि प्रकट करती हैं। इन मुद्दों को संबोधित करना एक समावेशी शैक्षिक वातावरण को बढ़ावा देने के लिए महत्वपूर्ण है जो उच्च शिक्षा में अधिक से अधिक महिला भागीदारी को प्रोत्साहित करता है।

निश्कर्श

यह अध्ययन रांची जिले में उच्च शिक्षा में महिलाओं की भागीदारी के लिए कई महत्वपूर्ण बाधाओं को उजागर करता है, जो शिक्षा तक पहुंच को रोकने वाली सामाजिक–सांस्कृतिक, आर्थिक और संस्थागत चुनौतियों की एक व्यापक समझ प्रदान करता है। सामाजिक–सांस्कृतिक बाधाएँ विशेष रूप से स्पष्ट हैं, जहाँ गहरे स्थापित सामाजिक मानदंड और मूल्य

महिलाओं की शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण को प्रभावित करते हैं। कई परिवार महिलाओं के लिए पारंपरिक भूमिकाओं को प्राथमिकता देते हैं, अक्सर उच्च शिक्षा को घरेलू जिम्मेदारियों की तुलना में कम महत्वपूर्ण मानते हैं। यह सांस्कृतिक मानसिकता युवा महिलाओं के लिए अवसरों को सीमित करती है और उनके आत्म–धारणा और महत्वाकांक्षाओं को प्रभावित करती है। अध्ययन यह बताता है कि इन रूढ़ियों को चुनौती देने और समाज में महिलाओं की शिक्षा के मूल्य को बढ़ावा देने के लिए जागरूकता कार्यक्रमों की तत्काल आवश्यकता है। सामुदायिक भागीदारी और संवाद को प्रोत्साहित करने से धारणाओं को बदलने और महिला छात्रों के लिए एक अधिक सहायक वातावरण विकसित करने में मदद मिल सकती है।

आर्थिक बाधाएँ भी एक महत्वपूर्ण अवरोध के रूप में सामने आई हैं, जहाँ कई परिवार उच्च शिक्षा से जुड़ी लागतों, जैसे कि ट्यूशन, किताबें और परिवहन, को वहन करने में असमर्थ हैं। निष्कर्ष बताते हैं कि एक महत्वपूर्ण संख्या में उत्तरदाताओं ने सीमित वित्तीय संसाधनों की रिपोर्ट की, जिसने उनके शैक्षणिक लक्ष्यों को प्राप्त करने की क्षमता को सीधे प्रभावित किया। इस मुद्दे को संबोधित करने के लिए महिला छात्रों के लिए विशेष रूप से डिजाइन किए गए छात्रवृत्तियों और अनुदानों जैसी लक्षित वित्तीय सहायता पहलों की आवश्यकता है। वित्तीय साक्षरता कार्यक्रमों की पहुंच बढ़ाने से परिवारों को अपनी बेटियों की शिक्षा में निवेश के बारे में सूचित निर्णय लेने के लिए सशक्त बनाया जा सकता है।

इसके अलावा, शोध यह रेखांकित करता है कि उच्च शिक्षा में महिला छात्रों की सफलता को सुविधाजनक बनाने में संस्थागत समर्थन का महत्व है। कई शैक्षणिक संस्थानों में संसाधनों की कमी है, जैसे कि मेंटरशिप कार्यक्रम, परामर्श सेवाएँ और महिलाओं के लिए अनुकूल परिसर की सुविधाएँ। अध्ययन नीति परिवर्तनों की सिफारिश करता है जो विश्वविद्यालयों और कॉलेजों को उन विशिष्ट जरूरतों को पूरा करने के लिए समावेशी रणनीतियों विकसित करने का आदेश देते हैं जो महिला छात्रों के लिए हैं। एक अधिक स्वागत योग्य और सहायक वातावरण बनाने से संस्थानों को महिलाओं के बीच उच्च नामांकन और प्रतिधारण दरों को बढ़ावा देने में मदद मिल सकती है।

पहचानी गई बाधाओं से प्रभावी रूप से निपटने के लिए एक बहु–आयामी दृष्टिकोण आवश्यक है। नीति निर्माताओं को शैक्षिक नीतियों और ढाँचों में लिंग समानता को प्राथमिकता देनी चाहिए, यह सुनिश्चित करते हुए कि उच्च शिक्षा में महिलाओं की भागीदारी बढ़ाने के लिए लक्षित पहलें बनाए रखा जाएँ और सही ढंग से वित्त पोषित की जाएँ। सरकारी एजेंसियों, शैक्षणिक संस्थानों और गैर–सरकारी संगठनों के बीच सहयोग से ऐसे व्यापक रणनीतियों का विकास हो सकता है जो महिलाओं को सामना करने वाली प्रणालीगत और सांस्कृतिक चुनौतियों को संबोधित करती हैं।

उच्च शिक्षा में महिला भागीदारी को बढ़ाना केवल व्यक्तिगत उपलब्धि का मामला नहीं हैय यह व्यापक सामाजिक–आर्थिक विकास और लिंग समानता को बढ़ावा देने के लिए आवश्यक है। शिक्षित महिलाएँ कार्यबल में योगदान देने, अपने परिवारों का समर्थन करने और सामुदायिक विकास में संलग्न होने की अधिक संभावना रखती हैं। महिलाओं की शिक्षा में निवेश करके, समाज एक अधिक समान वातावरण का निर्माण कर सकते हैं जो सभी के लिए लाभकारी हो, जिससे आर्थिक परिणाम और सामाजिक एकता में सुधार होता है। अंत में, रांची जिले में उच्च शिक्षा में महिलाओं की भागीदारी के लिए बाधाएँ जटिल और बहु–आयामी हैं। हालाँकि, नीति सुधारों, बढ़ी हुई जागरूकता कार्यक्रमों और संस्थागत समर्थन के माध्यम से इन चुनौतियों को संबोधित किया जा सकता है। अंततः, उच्च शिक्षा में महिलाओं की भागीदारी को बढ़ाना लिंग समानता हासिल करने और क्षेत्र में स्थायी सामाजिक–आर्थिक विकास को बढ़ावा देने के लिए एक महत्वपूर्ण कदम है।

संदर्भ

- सिफुना, डी. एन. (2006)। केन्या में उच्च शिक्षा में महिलाओं की भागीदारी में प्रमुख बाधाओं की समीक्षा। पोस्ट–कंपल्सरी एजुकेशन में शोध, 11(1), 85–105।
- फुलर, ए., फॉस्केट, आर., पैटन, के., और मारिंगे, एफ. (2008)। उच्च शिक्षा में भागीदारी में 'बाधाएँ'? यह इस बात पर निर्भर करता है कि आप किससे और कैसे पूछते हैं। भागीदारी और आजीवन शिक्षा का विस्तार, 10(2), 6–17।
- गुयेन, टी. एल. एच. (2013)। उच्च शिक्षा में महिला डीन के करियर में उन्नति की बाधाएँ और सूत्रधाररू वियतनाम में एक खोजपूर्ण अध्ययन। उच्च शिक्षा, 66(1), 123–138।
- अम्बरीन, एम. (2015)। पाकिस्तान में उच्च शिक्षा प्रबंधन में महिलाओं की भागीदारीरू संभावित बाधाओं का एक विश्लेषणात्मक अध्ययन। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ जेंडर स्टडीज इन डेवलपिंग सोसाइटीज, 1(2), 119–134.
- मार्शल, सी. ए. (2016). उच्च शिक्षा तक पहुँचने में बाधाएँ. भागीदारी का विस्तार, उच्च शिक्षा और गैर–पारंपरिक छात्ररू फाउंडेशन कार्यक्रमों के माध्यम से बदलावों का समर्थन, 1–18.

- सियान, जी., और कैलाघन, एम. (2001). विकल्प और बाधाएँरू विज्ञान, इंजीनियरिंग और प्रौद्योगिकी में महिलाओं की उच्च शिक्षा की पसंद को प्रभावित करने वाले कारक. जर्नल ऑफ फर्दर एंड हायर एजुकेशन, 25(1), 85–95.
- मैडसेन, एस. आर., और लॉन्गमैन, के. ए. (2020). उच्च शिक्षा में महिलाओं का नेतृत्वरू स्थिति, बाधाएँ और प्रेरक. जर्नल ऑफ हायर एजुकेशन मैनेजमेंट, 35(1), 13.
- वेस्टरवेल्ट, ई. एम. (1975). पोस्टसेकेंडरी शिक्षा में महिलाओं की भागीदारी में बाधाएँ. 1973–74 तक के शोध और टिप्पणियों की समीक्षा।
- खान, एस. आर. (1989)। दक्षिण एशिया में महिला शिक्षा में बाधाएँ। शिक्षा और रोजगार प्रभाग, जनसंख्या और मानव संसाधन विभाग।
- हन्नम, के.एम., मुहली, एस.एम., शॉक्ले–जलाबक, पी.एस., और व्हाइट, जे.एस. (2015)। संयुक्त राज्य अमेरिका में उच्च शिक्षा के क्षेत्र में महिला नेतारू वरिष्ठ नेता होने के समर्थन, बाधाएँ और अनुभव। एडवांसिंग वीमेन इन लीडरशिप जर्नल, 35, 65–75।
- यूसुफ, आर., और श्मीडे, आर. (2017)। अकादमिक उत्कृष्टता और सत्ता के पदों पर महिलाओं के प्रतिनिधित्व में बाधाएँ। एशियन जर्नल ऑफ जर्मन एंड यूरोपियन स्टडीज, 2, 1–13।
- अली, आर., जुमानी, एन.बी., और एजाज, एस. (2015)। पाकिस्तान में महिलाओं की उच्च शिक्षारू वादे, उपलब्धियाँ और बाधाएँ। पाकिस्तान जर्नल ऑफ विमेन स्टडीजरू आलम–ए–निस्वान, 22(2)।

BRDU IJMDR